ISSN: 2393-8048
International Conference of Education New Policy Relative to Computer
Venue: Sri Vinayak Mahavidhalya, Sri Vijaynagar, Rajasthan
23 May 2019

ममता कालिया के कथा साहित्य में स्त्री जीवन का यथार्थ

रमा उदावत, शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजकीय कोटा कला महाविद्यालय, कोटा

सारांश

ममता कालिया हिंदी कथा-साहित्य की ऐसी महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिन्होंने आधुनिक स्त्री के जीवन, उसकी आकांक्षाओं, संघर्षों और सामाजिक यथार्थ को सहज एवं प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनके कथा-साहित्य में स्त्री केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित पात्र नहीं है, बल्कि वह अपने अस्तित्व, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति सजग दिखाई देती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ममता कालिया के कथा-साहित्य में चित्रित स्त्री जीवन के विविध पक्षों का विश्लेषण करना है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार, विवाह-संस्था, घरेलू जिम्मेदारियाँ, आर्थिक निर्भरता, कार्यस्थल की चुनौतियाँ, सामाजिक रूढ़ियाँ तथा पुरुष-प्रधान मानसिकता के बीच स्त्री के संघर्ष का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। लेखिका स्त्री की आंतरिक संवेदनाओं, इच्छाओं, असुरक्षाओं और आत्मनिर्णय की आकांक्षा को भी विशेष महत्व देती हैं। उनके स्त्री पात्र परिस्थितियों से समझौता करने के साथ-साथ उनका प्रतिरोध करने और अपनी पहचान निर्मित करने का प्रयास करते हैं। ममता कालिया की भाषा में व्यंग्य, सहजता और संवादधर्मिता के माध्यम से स्त्री जीवन की विडंबनाओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है। उनका कथा-साहित्य बदलते सामाजिक परिवेश में स्त्री की स्थिति और उसके व्यक्तित्व-विकास की जटिलताओं को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। इस प्रकार उनका साहित्य समकालीन स्त्री जीवन के सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थ का सशक्त दस्तावेज प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: ममता कालिया, स्त्री जीवन, स्त्री विमर्श, नारी चेतना, सामाजिक यथार्थ, मध्यवर्गीय स्त्री, पितृसत्ता, आत्मनिर्भरता, हिंदी कथा-साहित्य, स्त्री संघर्ष.